

ऐतिहासिक पत्रस्तम्भ

[वि. सं. २०३२ कार्तिकमा सेती महाकाली अंचलको ऐतिहासिक सर्वेक्षणको लागि पुरातत्त्व विभागबाट श्री विश्वनाथ भट्टराइ श्री शङ्करमान राजवंशी श्री विजयशंकर श्रेष्ठको एक संयुक्त सर्वेक्षण टोली खटिएको थियो । ठाउँ ठाउँको सर्वेक्षण विवरण श्री विश्वनाथ भट्टराइले तयार गर्नुभयो । अभिलेख पढ्ने काम श्री शङ्करमान राजवंशीले गर्नुभयो । फोटोको काम श्री विजयशंकर श्रेष्ठले गर्नुभयो । श्री शङ्करमान राजवंशीले पढी ल्याउनु भएको केही अभिलेखहरूको उत्तर पाठ क्रमशः तल दिइन्छ ।

—सम्पादक]

शाके १२०९ (वि. सं. १३४४) को
राजा नागमल्लको ताम्रपत्र

- (१) ऋना स्वास्ती ॥ श्री शाके १२०९ फाल्गुन मासे सोमवासरे दसम्यां
- (२) तिथौ राइको आदेस् ॥
- (३) चौकिका पेषक अधिकारी कार्किवुडा थपा रोकया वादा थापा
- (४) सभै प्रति पिपलगाव्को अधालो वजाल गावको आला संकलि एकत्र पारी
- (५) पसाकि अकन्याछु छतीसे करअकर करि भास्करे उपाध्या पसाकि अकन्या
- (६) छु जो द्वाल करे तस नागमल्लको थारौ । अत्र साक्षी सिउ
- (७) राज विष्ट मधु थाइत चुनवा राउल केस भंडारि पभु जो
- (८) इसी चैत कार्कि सुहर वोहरा अर्जुन जोइसा लिषितं

शाके १२७४ (वि. सं. १४०९) को
राजा निरैपालको ताम्रपत्र

- (१) ॐ ॥ स्वस्ति ॥ श्री शाके १२७४ कार्तिक वदि प रविदिने वृश्चिक संक्रांतौ ॥ श्रीरा

- (२) जाधिराज राय प्रतापनारायण अपाडरायपाडणैक जगज्जिष्ठ राय तारा
- (३) मयंक इत्यादि विरुदावलीविराजमानः । श्री निरैपाल देवः चिरं जयतु । चैत
- (४) भाट ताष पसाभै ॥ पला ३ तिन पला चुडिबल्यानाका । हस्तोदक् 'घा' लिनमा
- (५) सासन् कि । लागभाग सहिरा पसाकिआ । हिल् पाणि अतुल साहलि । सर्वक
- (६) र विवर्जित । एकादशी आदित्यका वार उदक् धाल्यो । अत्र साषि मसघोपडचा
- (७) हार । आदि वह्य च कोटि राउल । थेचल् धो देउता ॥ पिल्कोटि राउल । जम घो
- (८) -च कोटि । प्रतापचंद पडचाहार । असराज देउता । साउन विचा दिमो
- (९) -विद महेश्वर प्रोहिता लिषितं वासुदेव ज्योतिर्विदा ॥ स्वदत्तां परद
- (१०) तां वा जे हरति वसुधरा । षष्ठिवर्षसहश्राणि विष्ठायां जायते
- (११) कुमि ॥ शुभमस्तु राजराष्ट्राणाम् ॥ लिखालि सिसुना पकत चातालो दि
- (१२) तलो साक्षिणा । ज ठाकुर पुड चौपाल पद रैया । मम वर्ष परिक्षीणयः कश्चि
- (१३)पतिर्भवतु.....शुभम

शा १३१५ (वि.सं. १४५०) को अजयमेर हाट
(डडेलघुरा) को मन्दिरको
राजा नागमल्लको शिलालेख

- (१) ॐ ॥ स्वस्तिभवानी भाव भावित षंभ षंभा
भरापधनो
- (२) ध्रुव साधियसंतोष कुंडा मृतकरादया ।
द्रष्ट.....
- (३) सूर्यमाला.....स्वदत्तहस्ता सद्रोहराजी विदि-
तान्य.....
- (४) यशोभि.....सूर्यमाला जयतादजस्र ॥ श्री नागमल्ल...
- (५) पराजगतिकृतवती रम्या देवालया निर्मानि
सुभम् ।
- (६) श्री शाके १३१५..... सुनाहार भिद्र सिंह विजु
लिषितम् ॥

शाके १५३६ (वि.सं. १६७१) को
राजा रामसाहाको ताम्रपत्र

- (१) ॐ ॥ स्वस्ति श्री साके १५३६ समये स्नावनमासे
सुक्लपक्षे
- (२) द्वादस्यां तिथौ सुक्रवासरे श्री महाराजाधिराज रैका
रामसा
- (३) ह पादार्घ चिरं जयतु रैकाजु पायल मयाचितै हुदाले
गरिदिने
- (४) पिरोजा चोरकि हुदीलेककि इजरि गाडकी वगडु
दुलव भाट
- (५) कि हुडालि गरी दिनि अषगरि दिने धुलसी उलि-
हिल पानिकइ
- (६) कशाह घात पिनलागन भाराह भुमिपाहघट सुदा अत्र
- (७) साकिचंद्र सुर्य भुमंडलका साकि रुद्रसाह गुसइ ज्यु
चतु
- (८) देउवा जसुवोगटि निडर साउद माहाराज भाडारि सुर्ज
- (९) वोरा ध्यानु षडका मानंद उप्रेति गजाधनेपने
तुनागर विठ
- (१०) सालसेटिपिठ पिवल फुलारो लिषित साकि कासि
जोईसि सा
- (११) रपु सेटिको कडारो अनेथा नास्ति सोरतं परदतं
वा जे हरं

(१२) ति वसु दरा षटिर वर्ष सहस्रानि विटा जायते-
क्रिमि उसग

(१३) लासुदा अनंतभाटले पाइ

शाके १५५५ (वि.सं. १६९०) को
राजा रुद्रसाहीको ताम्रपत्र

- (१) श्री साके १५५५ समये माघमासे शुक्लपक्षे नवम्यं-
तिथौ
- (२) रविवासरे श्री महाराजाधिराज रैका रुद्रसाहि
पादा चिरं
- (३) जयतु श्री रैकाज्यु पाखेले मयाचितै भुमिदिनि वलि-
भद्र भा
- (४) टलै पाइ कोटिलिषल राउकि हुदिया जीतै लागि जा
- (५) डकिवगडिलेगकि इजनिपाइ अत्र शाकि भिजा गु
- (६) शाइ रुदिदेउवा किति वोगटि नाग शाउद विहु भ
- (७) डारि भिजा वोरो आनुषडका दामवडाइ नागर वि
- (८) षट पुरन शैटि वाटु उप्रति विनापनेरु करन फुला
- (९) रा लिषित शाकि केशव जोईशी अन्यथा नास्ति ॥
- (१०) स्वदतं परदतं वाये हरंति वसुंधरा ॥ षष्टिर्वर्षस
- (११) हस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि । ॥ शुभमस्तु ॥
कंपुरसाउको कट्टारो ॥

शाके १५६४ (वि.सं. १६९९) को
राजा पाहाडी साहीको ताम्रपत्र

- (१) श्रीशाके १५६४ समये मार्गसीर मासे शुक्लपक्षे दु
- (३) तियायां सोमासरे श्री महाराजाधिराज रैका पा
- (३) हाडिसाइ पादा चिरंजयतु श्रीरैकाज्यु पायले म
- (४) याचितै भुमिदिनि पुरिभटलै पाइ सेलागाउ भितर
- (५) कोउषाल्ये आसोतला वोराको पायो उइलागील ककि
- (६) इजरि गाउकिवगडि पाइ साक्षि वहादुर साइ गुसा
- (७) इ अजानिदेउवा किति वोगटि मनिशाउद दुसाभंडा
- (८) रि पुरि पनेरु गोपसेटि लिषितं केशव जोईसी कडारि
- (९) तंदुल वशेटि अनेथा नास्ति सुदतं परदतं वा जे हरंति
- (१०) वसुंधरा षष्टत् वर्षशहस्रानि विष्टायां जायत
- (११) तेक्रिमीः । । । जीजोडालाई पायोः ॥

शाके १५६८ (वि. सं. १७०३) को
राजा पाहाडी साहीको ताम्रपत्र

- (१) श्रीशाके-१५६८-समये मार्गसिर मासे हुति
- (२) यातिथौ शनिवासरे मूलनक्षत्रे श्री महारा
- (३) जाधिराज रैका पाहार साहिपादां चिरं जयतु
- (४) श्री रैकाज्यु पायले मयाचितै पंतु राउलकी
- (५) हुदी भुमिदिनिलेकि इजारि गाडकि वगडि प
- (६) दारैडरा ३ बेतरै डरा ३ उजगलो पुरिट लैपउ
- (७) शर्वकर अकर गरि पाइ अत्र साक्षि चंद्र सु
- (८) यंभुमंडलका साक्षि वाहादुर साइ ग्रसा
- (९) इज्युजा मनिदेउवा कितिवोगटि मनिशाउ शार
- (१०) गभडारि पन्याग बोरा गाग्र षडका पुरिपने
- (११) रू नेवपुरणशेटि कसु उप्रैति सिवा पनेरू
- (१२) लीषित साक्षि मधुजोइसी कंडारी तंडुल
शेटि: । शुभ:

शाके १५६३ (वि. सं. १७२८) को
राजा विक्रम साहीको ताम्रपत्र

- (१) श्री शाके १५९३ समये आषाड मास शुक्ल पखे
तृतीयाया
- (२) तीथौ वृधवासरे श्री महाराजाधीराज श्री रैकावीक्रम
शाही
- (३) पादाञ्चौरं जयतु श्री रैकाज्यु पाजले मयाचीतैको
बेतघट
- (४) उजगलासा मितढानु मय्याको रेतको पामोमानासै
धमटले पायो
- (५) वनरासमा थिति र इडराबेतपायो अनंत सेजालको
हुंदो पा
- (६) यो सर्वकर अकर गरि पायो हति सैनेग तोडि पायो
अत्र साछी चं
- (७) द्रसुर्यं भुमन्डलका सछी मांधाता भुसइ शाइज्यु भगी
शाउन भग भडा
- (८) रीनीडुदेउवार मथुवोगटी रजवार गंगापनेरू जोगा
उप्रैति करू
- (९) विष्टज्युज्या विष्ट विकरम षडका लीषित शाकि
दशरथ जो

(१०) सिजु नारद पंज्यु अन्यथा नास्ति गढग स्वदत्तां
परदत्तां बाज्ये ह

(११) रते वसुंधरा षष्ठीवर्ष सहस्राणि बीष्टायां जायते
कमी

शाके १५६७ (वि. सं. १७३२) को
राजा जितारि सिंहको ताम्रपत्र

- (१) ॐ ॥ स्वस्ति ॥ श्री शाके १५९७ मासे ७
तिथौ ५ वारे ६ न
- (२) क्ष १४ शुक्लपक्षे श्री महाराजाधिराज जितारि
सिंह पादा
- (३) शिवर जयतु जितारि सिंह रजवारले अमर सिंह
गोशाइ
- (४) ज्युले रीडरा बेत रेगम भित्रानाली १० युहानाली
५ कपसा
- (५) क आका पुर्धरकि ठौव सया भैउति भूमीमया भै
मानसिंह भ
- (६) टज्युले भूमी पाइ । अत्र शाक्षी सूर्याचन्द्रमसौ
भूमंडलका सा
- (७) शाक्षी हत्तिकरनसिंह अधिकारी भगु विष्ट
तुल्या नाल्या अ
- (८) मोगकवर उषेडो फाग्या षाडुचारू थान् चारू गर्षा
साक्षी
- (९) लिषित शाक्षी सोवर्ण जोइसि ॥ ॥ स्वदत्तं परदत्तं
वा जो
- (१०) हरति वसुंधरा । षष्ठीवर्ष सहस्राणि विष्टा
(११) यां जायते कमी ॥ ॥ उभयस्याणाम् ॥ ॥

शाके १६०७ (वि. सं. १७४२) को
राजा विक्रम साहीको ताम्रपत्र

- (१) श्री साके १६०७ समये आस्विन सुदि १५ श्री म
- (२) हाराजाधिराज श्री रैका विक्रम साहि पा
- (३) दाञ्चौरं जयतु श्री रैकाज्यु पायलै मयाचि
- (४) तै मानसिध भटिज्युले तराडी किहुनि वंडा
- (५) लि संकल्प गरि गाडकि वगडीलेदकि इज
- (६) रि सुहा सर्वकर अकर गरि पाइ अत्र साछि
- (७) मांधाता साइ गुसाइज्यु सिवदास सा

- (८) उनषिया भडारि राम देउवा मथुरा वोग
(९) टि दसरत पनेरूज्यु भागीउत विष्टज्यु स्याम
(१०) विष्ट नारदपंज्यु लीषीत साक्षि हसि जोइसिज्यु
(११) अन्याथा नास्ति पाषायो छियते रेषा समुद्रे छि
(१२) यते जलंत (पृथिव्यांक्षीयते रेणुमल्ल भाषा नक्षीयते)
शाके १६१२ (वि.सं. १७४७) को
राजा मांधाता साहीको ताम्रपत्र
- (१) श्री शाके १६१२ समये वैशाष शुदि ५ श्री महारा-
धिराज श्री रैका मांधा
(२) ता साहिपादा चिरंजयतु श्री रैकाज्यु पायलेमया
चित्तं पगरेतकाषेत
(३) घट्ट उजगला समेतको टिलि भितर गरव्या सेटिको
हुनोषेत उजगलो
(४) गाडकि वगडि लेककि इजरि सुदा हरिकेश भटिज्यु-
ले संकल्प गरि
(५) जिजाडालाई पायो सर्वकर अकर सर्वसोत त्रिव-
जितगरि पायो
(६) वमशाउ षिमशाउ राठवगसिपया अत्र साछि चंद्र
सुट्यं भूमंडल
(७) का साक्षि रघुनाथ शाह गुशाइज्यु शिवदाश शाउन
भिया भडा
(८) रि रामदेउवा रजवार मथुरा वोगटि रजवार
दशरथपनेरूज्यु ह
(९) रिकेश भटिज्यु नेव श्याम शेडि लिषित साछि
दशरथ जोइसिज्यु
(१०) लिषितं पंथ नारदेन ॥ ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा
योहरेद्धं वसुंधरांष
(११) ष्टिर्वर्षसहस्राणिविष्टायां जायते कृमि ॥ ॥
पाषाणे क्षीय
(१२) तेरेषा समुद्रे क्षीयते जलं ॥ पृथिव्यां क्षीयते रेणु
मल्ल भा
(१३) षानक्षीयते ॥ ॥ शुभ ॥ ॥ कडारितहरि
शाउ

शाके १६२३ (वि.सं. १७५८) को
राजा मांधाता साहीको ताम्रपत्र

- (१) श्री साके १६२३ समये मार्गसीर सुदी ३ श्री
महाराजा
(२) धीराज श्री रैका मांधाता साही पादाश्चिरं
जयंतु श्री
(३) रैकाज्यु पायले मयाचितोइ वमनगाउ वीमाली
भीत
(४) र सीउन्या वीराको आसोनै आपराच जोराइल
पीपल
(५) कोटभौतर जोगवोराको हुनो रै आकाडेड पेत
हरीकेस
(६) भटीज्युले पायो अत्र साछी चंद्र सूर्य भूमंडलका
साछी रघु
(७) नाथ साही गुसाइज्यु चन्द्रमान कठाइतज्यु नागर
साउन
(८) नैदा भडारी सुरदेउवा अवरन वोगटी राह
सीग वीष्ट
(९) लिषित साछी केशव पथ कडारीतंधासी साउ
अन्यथा नास्तीती ॥ ॥
शाके १६३३ (वि.सं. १७६८) को
राजा मांधाता साहीको ताम्रपत्र
- (१) श्री साके १६३३ समये श्रावण सुदी १३ श्री
महाराजा
(२) धीराज रैका मांधाता साही पादाश्चिरं जयंतु श्रीरै
(३) काज्यु पायले मयाचितै वमनगाउ विमाली भीत
(४) र तला साउनको हुनो गडो गाडकी वगडी लेककी
(५) इजरी सुदाहरीकेस भटीज्युले पायो अत्र साछी चंद्र
(६) सूर्य भूमंडलका साक्षी श्री रघुनाथ साही गुसाइज्यु
(७) दुलवउप्रती रामेश्वर पनेरु देव ओस्ती चंद्रमान कठा
(८) इतज्यु नागर साउन नैदा भडारी सुरदेउवा अवरन
(९) वोगटी रजवार राइसीग वीष्ट लिषित साछी केस
(१०) व पंथ ॥ पाषाणे क्षीते रेषा समुद्रे क्षीयते जलं ॥
(११) पृथिव्या क्षीयते रेणु मल्लभाषा नक्षीयते ॥
तला साउन

- (१२) लेमातठलाउनकापूकसै चालीस रूपैयां लीया हरीकेस
- (१३) भटी पुलेदीया रैकाज्युले पत्र गरी हरीकेस भटीज्यु दीनु
शाके १६३८ (वि. सं. १७७३) को
राजा मांधाता साहीको ताम्रपत्र
- (१) श्री साके १६३८ समये आषाड सुदी ३ श्री महाराजाधीराज श्री
- (२) रैका मांधाता साही पादाश्रिरं जयतु श्री रैकाज्यु पायले भया चीतो
- (३) इ हरीकेस भटीज्युलेनो सेनाकी वंलेकी पांडेकी ओथीकी सौ ज्यालकी
- (४) भौनाको टीकीमन लीयाकी हुनीसी रोलीटांटर चीत्रकार सुदापाई
- (५) तैलागी लेककी इजरी गाडकी वगडी पाइ सर्वकर अकर सर्वसोतवी
- (६) वजीत गरी पायो अत्र साक्षी चंद्र सूर्य भूमंडलका साछी श्री रघुना
- (७) थ साही गुसाइज्यु दुलप उप्रेतीज्यु रामश्वर पनेरुज्यु नागर साउन नैदा
- (८) भंडारी ईद्रदेउवा पर्तापवोगटी राइसींग वीष्ट लिषित साछी गीरीवर
- (९) जोइसीज्यु लिषित पंथ केसवेन ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा ये हरेचच वसुंधरां
- (१०) षष्टिवर्षसहस्राणि त्रिण्यां जायते कृमि ॥ पाषाणे क्षीयते रेषा
- (११) समुद्रे क्षीयते जलं ॥ पृथिव्यां क्षीयते रेणु मल्ल भाषा नक्षीयते ॥ ॥
शाके १६३९ (वि.सं. १७७४) को
राजा मांधाता साहीको ताम्रपत्र
- (१) श्री साके १६३९ समये आस्विन वदी ६ श्री महाराजाधी
- (२) राज श्री रैका मांधाता साही पादाश्रिरं जयंतु श्री रैकाज्यु पा
- (३) यले मयाचितोइ उप्रेतीको हुनो घोडकाटी उरंडरा ६ छैवाह
- (४) लागो भयालको हुनो गडरंडरा १ ॥ डेड हरीकेस भटीज्यु
- (५) ले पायो अत्र साछी चंद्र सूर्य भूमंडलका साछी श्री र
- (६) घुनाथ साही गुसाइज्यु दुलव उप्रेतीज्यु नेव हरीके
- (७) भ भटिज्यु नगर साउन नदा भंडारी सग राम देउवा प
- (८) रताप वोगटी राइसींग वीष्ट लिषित साछी केसव पंथ
शाके १६४१ (वि.सं. १७७६) को
राजा मांधाता साही ताम्रपत्र
- (१) श्री साके १६४१ समये जेष्ठ सुदी १३ श्री महाराजाधी
- (२) राज श्री रैका मांधाता साही पादाश्रिरं जयंतु श्री रैकाज्यु
- (३) पायले मयाचीतोइ जीजोडा भीतर रोसेराको हुनो दमोला
- (४) उत्तीन गडो हरीकेस भटीज्युले पायो अत्र साछी चंद्र सूर्य भूम
- (५) डलका साछी श्रीरघुनाथ साही गुसाइज्यु वामदेव उप्रेतीज्यु
- (६) रतन कठाइतज्यु नागर साउन नैदा भंडारीसंग रामदेउवा पर
- (७) तीप वोगटी राइसींग वीष्ट लिषित साछी केसव पंथ ॥
- (८) पाषाणे क्षीयते रेषा समुद्रे क्षीयते जल ॥ पृथिव्यां क्षीयते
- (९) रेणु मल्ल भाषा नक्षीयते ॥ अन्यथा नास्ति कंडारित मनोरथ सउ
शाके १६५३ (वि. सं. १७८८) को
राजा कल्याणचंद्रदेवको ताम्रपत्र
- (१) श्री महाराजाधिराज श्री राजा कल्याणचंद्र देवज्युले ताम्रपत्र करी मालकी का

- (२) जी खगसीं करनभटले पारी कोटाका परगनामै
मौजे पीपुरा पोहकडका प
- (३) रगपनसैमौ चुन एकत्र हरि गाउपगरा धुरा दंडा
सुया पायो सर्वकर अकरास
- (४) पं छदयी सुधमंडेली पेटीली नाटलटाली सर्गफी
टी दीपाताल फीजीधी सर्वक
- (५) र अकर करी पायो मनकुपा गैडाले कुमाउ राभ
भै अपशु अमल करी रह्यो कर्मभइ
- (६) टले हमरो संग करी राभ पाउकरो अपशुकका
मालससंगलाडी कालको मन गयो
- (७) संगका यामन कुवा छारो तैरो तकीपागी खगसी
अघां डौटी कुमाउ थेक घरकर
- (८) नु श्री राजा कल्यानचंद्र देवज्युकी संमतीले
चवाउनी करनु भटकी क तसीले चु
- (९) वनी महीप राना पकुवार श्री दीपसींह गुसाईज्यु
श्री दीपराम पाडे मुरारीभसीं
- (१०) गुणानंद पाडे गुरुजेयसींग सुरसींग लछीमीसींग
गुसाई रसील श्री
- (११) उमादेव वीष्ट पगसीरनसींग गुसाई रामकीसोर
मकाम गुसाई
- (१२) सोसीरीरमनी यौपरी वीरभद्र केसव भडा
- (१३) री वीरसींग सेज्याली अनुपसींग पनारी
- (१४) श्री गनअरसन गैयरी स्याम पराडसींग कार्की रा
- (१५) दीमल रीवमवोरो मानसींग फरलालसाल म
- (१६) रग लीषीत दुगी चौधरी साके १६५३ भदौ
- (१७) सुदी ११ कैमारफत राय रकदानंतग
- (१८) गरीहतगक डोटी